ANNUAL ISSUE-2024

Library Development in India: Delusion vs Reality

भारत में पुस्तकालय विकास : विभ्रांति बनाम वास्तविकता

Editors

Dr Sunil Kumar Satpathy

Moderator,lisforum_orissa

Dr Debraj Meher

Librarian, OUAT, Bhubaneswar

lisforum_orissa

lisforum_orissa

Estd. 25th October 2006

https://www.lisforumorissa.com

email: lisforumorissa@gmail.com

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा में पाठ्यक्रम विकास के माध्यम से रोजगार क्षमता बढ़ाना

संजय शाहजीत
सहायक प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान,
मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर छग
sanjayshahjit@matsuniversity.ac.in

डॉ.कल्पना चंद्राकर
सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान,
मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर छग
drkalpana@matsuniversity.ac.in

परिचय

आज के अधिक बदलते जॉब मार्केट में, यह सुनिश्चित करना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि स्नातकों के पास अपनी नौकरी की संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान अवश्य हो। यह पुस्तकालय और सूचना विज्ञान क्षेत्र में विशेष रूप से सच है, क्योंकि पेशेवरों को सूचना प्रबंधन, प्रौद्योगिकी और उपयोगकर्ता सेवाओं के जटिल वातावरण में पहचान करना होगा। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा में पाठ्यक्रम के डिजाइन को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है ताकि छात्रों को नौकरी बाजार की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त रूप से युक्त किया जा सके। जब शैक्षिक कार्यक्रमों को नौकरी बाजार की बदलती मांगों को पूरा करने के लिए तैयार किया जाता है, तो स्नातकों को मूल्यवान नौकरियां मिलने और अपने कार्यस्थलों में महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की अधिक संभावना होती है। वर्तमान पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा रुझानों की जांच करके, क्षेत्र में आवश्यक महत्वपूर्ण नौकरी कौशल को इंगित करके और पाठ्यक्रम विकास मॉडल का मूल्यांकन करके, इस शोध का उद्देश्य केंद्रित शैक्षिक उपायों के साथ रोजगार क्षमता को बढ़ावा देने के तरीकों को उजागर करना है।

यह शोध शैक्षणिक तत्परता और उद्योग मानकों के बीच की खाई को पाटकर क्षेत्र में शिक्षकों, नीति निर्माताओं और चिकित्सकों के लिए उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रदान करने का इरादा रखता है। अंततः, इसका उद्देश्य स्नातकों को पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के निरंतर बदलते और प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और योग्यताओं से सुसज्जित करना है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

1.शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार योग्यता

शिक्षा में रोजगार योग्यता की धारणा को विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों द्वारा समर्थित किया जाता है। एक लोकप्रिय सिद्धांत "कौशल बेमेल सिद्धांत" है, जो स्नातकों के पास मौजूद कौशल और नियोक्ताओं

को आवश्यक कौशल के बीच अंतर का प्रस्ताव करता है। शैक्षणिक संस्थान इस विसंगति को संबोधित करने वाले विशिष्ट पाठ्यक्रम विकसित करके कार्यबल के लिए छात्रों की तत्परता में सुधार कर सकते हैं।

2.पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए मॉडल

विभिन्न पाठ्यक्रम विकास मॉडल उपलब्ध हैं, जिनमें से प्रत्येक शैक्षिक कार्यक्रम बनाने के लिए एक अलग विधि प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए, टायलर मॉडल सटीक लक्ष्य स्थापित करने और यह सुनिश्चित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है कि निर्देशात्मक गतिविधियाँ उन लक्ष्यों के अनुरूप हों। इसके विपरीत, टायलर मॉडल महत्व और दक्षता की गारंटी के लिए पाठ्यक्रम डिजाइन प्रक्रिया में हितधारकों को शामिल करने पर जोर देता है।

3.उद्योग की आवश्यकताओं के साथ पाठ्यक्रम का समन्वय

स्नातकों की रोजगार योग्यता में सुधार करने के लिए पाठ्यक्रम को उद्योग की माँगों के साथ संरेखित करना महत्वपूर्ण है। शैक्षिक संस्थान नियमित आवश्यकताओं का आकलन करके, उद्योग भागीदारों के साथ काम करके, तथा नियोक्ताओं की प्रतिक्रिया को शामिल करके, छात्रों को नौकरी बाजार के लिए मूल्यवान कौशल और ज्ञान प्रदान करने के लिए अपने कार्यक्रमों को अनुकूलित कर सकते हैं।

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा में पाठ्यक्रम

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में अलग अलग स्तर पर कई प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे है जो शिक्षार्थियों के ज्ञान कौशल और नौकरी के मौके के अनुसार उन्हें पारंगत कर इस काबिल तैयार करते है कि नौकरी बाजार के मांग को पूरा करने में समर्थ होते है। भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम प्रशिक्षण हेतु 19वीं सदी में व्यापक तौर पर प्रारंभ किया गया था जिसका परिणाम आज अनेकों विश्वविद्यालयों में इस विषय के पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया है।

भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम का विवरण निम्न तालिका से स्पष्ट से किया गया है–

क्रमांक	पाठ्यक्रम	संस्थान/संचालनकर्ता	वर्ष
1	बुनियादी प्रशिक्षण	सयाजी राव गायकवाड़ बड़ौदा राज्य	1910–11
2	डिप्लोमा पाठ्यक्रम	पंजाब विश्वविद्यालय	1915
3	स्नातकोत्तर डिप्लोमा	मद्रास विश्वविद्यालय	1937
4	स्नातक पाठ्यक्रम	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्याल	1947
5	स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम	दिल्ली विश्वविद्यालय	1949
6	पीएचडी	दिल्ली विश्वविद्यालय	1951
7	एमफिल	दिल्ली विश्वविद्यालय	1978

रोजगार क्षमता में सुधार

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान (एलआईएस) शिक्षा में पाठ्यक्रम डिजाइन और नौकरी की तत्परता का परस्पर संबंध इस बात के लिए केंद्रीय है कि स्नातक इस दोनों पेशेवर क्षेत्र की विकसित होती आवश्यकताओं के लिए कितनी अच्छी तरह सुसज्जित हैं, क्योंकि शिक्षार्थियों को आदर्श रूप से ऐसे निर्देश प्राप्त होने चाहिए जो न केवल तकनीकी दृष्टिकोण से बल्कि सैद्धांतिक कोण से भी उनकी क्षमता विकसित करें। तकनीकी प्रगति और पुस्तकालयों, सूचना केंद्रों के स्थान में परिवर्तन के इस संदर्भ में, यह अनिवार्य है कि एलआईएस कार्यक्रम इन कौशलों को अपने पाठ्यक्रमों में शामिल करें। विद्वान अब पारंपरिक पुस्तकालय विज्ञान, जैसे प्रसूचीकरण और संदर्भ सेवाओं की तलाश नहीं करते हैं, इसके बजाय वे ऐसा पाठ्यक्रम चाहते हैं जिसमें 21वीं सदी के लिए महत्वपूर्ण कौशल शामिल हों, डिजिटल साक्षरता, डेटा प्रबंधन तकनीक, सूचना वास्तुकला और उपयोगकर्ता अनुभव डिजाइन। पाठ्यक्रम अनुमोदन प्रक्रियाओं के दौरान एलआईएस कार्यक्रमों और उद्योग के पेशेवरों के बीच सहयोग इंटर्नशिप और समूह परियोजनाएं – पाठ्यक्रम में यह छात्रों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है जो उन्हें अध्ययन पूरा होने पर काम करने के लिए तैयार बनाता है। इसलिए सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के एकीकरण पर जोर देने वाला एक मजबूत पाठ्यक्रम एलआईएस स्नातकों को लाभान्वित करता है, जिन्हें तेजी से विकसित हो रहे सूचना परिदृश्य में भूमिकाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को भरने के लिए रखा जा सकता है।

परिणामों का महत्व

यह स्पष्ट करना कि शैक्षिक कार्यक्रम उद्योग की आवश्यकताओं से कैसे समानता खाते हैं, वर्तमान पाठ्यक्रम विकास प्रक्रियाओं और हितधारक दृष्टिकोणों में विसंगतियों को उजागर कर सकता है। ये परिणाम पाठ्यक्रम सामग्री को संशोधित करने की आवश्यकता को उजागर करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों के पास पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के लगातार बदलते क्षेत्र के लिए आवश्यक कौशल और योग्यताएं हैं। इसके अलावा, महत्वपूर्ण रोजगार कौशल को इंगित करने से शिक्षकों को कौशल अंतर को कम करने और कार्यबल के लिए छात्रों की तैयारी में सुधार करने के लिए विशिष्ट हस्तक्षेप करने में मदद मिल सकती है।

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान स्नातकों के लिए रोजगार के अवसरों में सुधार करने के लिए, सूचना क्षेत्र की बदलती जरूरतों को प्रतिबिंबित करने के लिए पाठ्यक्रम को अद्यतन करना महत्वपूर्ण है। शुरुआत में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा एनालिटिक्स और डिजिटल क्यूरेशन जैसे उभरते उपकरणों को संबोधित करने वाली प्रौद्योगिकी कक्षाओं को शामिल करने से छात्रों को बड़ी मात्रा में सूचना को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, प्रौद्योगिकी कंपनियों और सूचना संस्थानों के साथ इंटर्नशिप और सहयोग जैसे व्यावहारिक प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करने से छात्रों को व्यावहारिक उपयोगों का सीधा अनुभव मिलेगा, जिससे उनके काम पर

रखे जाने की संभावना बढ़ जाएगी। इसके अलावा, पुस्तकालय विज्ञान, डिजिटल मानविकी और सूचना प्रौद्योगिकी को मिलाने वाली अंतःविषय विधियों पर प्रकाश डालने से विभिन्न सूचना परिदृश्यों को पहचान करने में सक्षम बहुमुखी विशेषज्ञ तैयार हो सकते हैं। छात्रों को समुदाय की जरूरतों को प्रभावी ढंग से पूरा करने और गलत सूचना और डिजिटल असमानताओं के कारण होने वाले मुद्दों को संबोधित करने में मदद करने के लिए उपयोगकर्ता अनुभव डिजाइन और सूचना साक्षरता दोनों पर जोर देना महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम में परियोजना प्रबंधन, नेतृत्व और वकालत कौशल को शामिल करके, भविष्य के पुस्तकालयाध्यक्ष और सूचना पेशेवरों को पारंपरिक सीमाओं से परे भूमिकाएं निभाने के लिए सुसज्जित किया जा सकता है, जैसे कि सामुदायिक जुड़ाव और कार्यक्रम विकास, उन्हें सशक्त बनाना। अंततः, व्यावसायिक विकास पर निरंतर ध्यान केंद्रित करने से स्नातकों को लगातार विकसित हो रहे नौकरी बाजार में लचीला और अद्यतित रहने में मदद मिलेगी। पुस्तकालय और सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम को बढ़ाने के लिए एक समग्र रणनीति को लागू करने के माध्यम से, शैक्षणिक संस्थान अपने स्नातकों के लिए कैरियर के अवसरों को काफी बढ़ा सकते हैं और उन्हें कल के सूचना–संचालित समाज में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए तैयार कर सकते हैं।

भविष्य के शोध निर्देश

निष्कर्ष में, यह बातचीत भविष्य के अध्ययन के लिए संभावित मार्गों को स्पष्ट कर सकती है, जिसमें स्नातकों की नौकरी की तत्परता पर पाठ्यक्रम सुधारों के स्थायी प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए अनुदैर्ध्य शोध, विभिन्न स्कूलों के बीच पाठ्यक्रम नियोजन विधियों की तुलना, और पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा के भविष्य पर प्रौद्योगिकी और डिजिटल कौशल के प्रभाव की खोज शामिल है। यह अध्ययन शोध निष्कर्षों, निहितार्थों, सिफारिशों और भविष्य के शोध दिशाओं पर चर्चा करके पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है, जो पाठ्यक्रम विकास प्रयासों के माध्यम से स्नातक रोजगार क्षमता में सुधार करने में मदद कर सकता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, ''पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा में पाठ्यक्रम विकास के माध्यम से रोजगार क्षमता में सुधार'' पर अध्ययन ने नौकरी बाजार के लिए स्नातकों की अधिक प्रभावी तैयारी के लिए उद्योग की आवश्यकताओं के साथ शैक्षणिक कार्यक्रमों का मिलान करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। पाठ्यक्रम कैसे विकसित किया जाता है, हितधारकों के विचार और आवश्यक रोजगार कौशल की जांच करके, इस शोध में पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातकों की नौकरी की संभावनाओं को बेहतर बनाने के तरीकों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है।

परिणाम पाठ्यक्रम को नियमित रूप से अपडेट करने, उद्योग भागीदारों के साथ काम करने और कौशल अंतर को कम करने के लिए व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के महत्व को उजागर करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि स्नातकों के पास पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के लगातार बदलते और प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक योग्यताएं हों। शैक्षणिक संस्थान छात्रों को सफल

करियर के लिए तैयार करने और विशिष्ट हस्तक्षेप और सुझावों को लागू करके उनके क्षेत्र में सकारात्मक योगदान देने पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। भविष्य में, शोधकर्ता स्नातक रोजगार क्षमता को बढ़ाने में पाठ्यक्रम विकास की प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए अनुदैर्ध्य अध्ययन करने, तुलनात्मक विश्लेषण करने और उभरते रुझानों की जांच करने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। शिक्षक, नीति निर्माता और व्यवसायी पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शिक्षा के भविष्य को आकार देने और स्नातकों को उनके करियर में सफल होने में मदद करने के लिए इस अध्ययन के निष्कर्षों का उपयोग करने के लिए एक साथ आ सकते हैं। मूल रूप से, अध्ययन स्नातक रोजगार क्षमता में सुधार करने के लिए पाठ्यक्रम विकास की क्षमता पर प्रकाश डालता है और शैक्षिक कार्यक्रमों को अद्यतित और उद्योग की मांगों के अनुरूप प्रासंगिक रखने के लिए सक्रिय प्रयासों की आवश्यकता पर जोर देता है।

संदर्भ

1. Belzer, J.. (1969). Information Science Education: Curriculum Development and Evaluation.
2. Edegbo, W. I.. (2011). Curriculum Development in Library and Information Science Education in Nigerian Universities: Issues and Prospects. 1.
3. Yi, Z.. (2018). History of curriculum development in library science education in China. 46.
4. Pizika, N.. (2014). Embedding Employability Skills in Computer and Information Science Program Curriculum. 8(2).
5. Hilary, Hughes., Nerilee, Hall., Megan, Pozzi. (2017). Library Experience and Information Literacy Learning of First Year International Students: An Australian Case Study. Communications in Information Literacy, doi: 10.15760/COMMINFOLIT.2017.11.2.4
6. Jordi, Ardanuy., Cristóbal, Urbano. (2019). The academic–practitioner gap in Spanish library and information science: An analysis of authorship and collaboration in two leading national publications:. Journal of Librarianship and Information Science, 51(2):317-330. doi: 10.1177/0961000617726125
7. Holt, Zaugg. (2020). The Development, Design, and Implementation of a Library Assessment Framework. Journal of Library Administration, doi: 10.1080/01930826.2020.1820277
8. Reina, Ferrández-Berrueco. (2016). Universidad y empresa. Experiencias europeas de curriculum integrado. Interrogantes pendientes. Revista Española de Educación Comparada, doi: 10.5944/REEC.27.2016.15973

lisforum_orissa

9. Ernie, Chang., Hui-Syuan, Yeh., Vera, Demberg. (2021). Does the Order of Training Samples Matter? Improving Neural Data-to-Text Generation with Curriculum Learning. doi: 10.18653/V1/2021.EACL-MAIN.61
10. Christina, Hoffman, Gola., Irene, Ke., Kerry, Creelman., Shawn, P., Vaillancourt. (2014). Developing an Information Literacy Assessment Rubric: A Case Study of Collaboration, Process, and Outcomes.. Communications in Information Literacy, doi: 10.15760/COMMINFOLIT.2014.8.1.157
11. Alison, S., Clay., Kathryn, M., Andolsek., Gloria, Zhang., Priya, Alagesan., Isabel, DeLaura., C., Phifer, Nicholson., Saumil, M., Chudgar., Aditee, P., Narayan., Nancy, W., Knudsen., Melinda, Blazar., Pamela, D., Edwards., Edward, G., Buckley. (2023). Creation of an asynchronous faculty development curriculum on well-written narrative assessments that avoid bias. BMC Medical Education, doi: 10.1186/s12909-023-04237-w
12. Jeroen, Bastiaanssen., Daniel, Johnson., Karen, Lucas. (2021). Does better job accessibility help people gain employment? The role of public transport in Great Britain:. Urban Studies, doi: 10.1177/00420980211012635
13. F., Di, Pace., Kaushik, Mitra., Shoujian, Zhang. (2021). Adaptive learning and labor market dynamics. Journal of Money, Credit and Banking, doi: 10.1111/JMCB.12764
14. Anjali, Rajendra, Gondhalekar., Eliot, L, Rees., Daniel, Ntuiabane., Osman, Janjua., George, Choa., Oziegbe, Eboreime., Alison, Sturrock. (2020). Levelling the playing field: students' motivations to contribute to an amnesty of assessment materials.. BMC Medical Education, doi: 10.1186/S12909-020-02320-0

xxxxxxxxxxxx

lisforum-orissa